पाठ-3

उपहार

– प्रेमकोमल बूँदिया

आइए सीखें

◆ कहानी के माध्यम से दयालुता का भाव ◆ संयुक्त क्रिया से परिचय ◆ योजक चिह्न का प्रयोग।

एक राजा बड़ा न्यायप्रिय और दयालु था। उसके न्याय और दयालुता के चर्चे दूर-दूर तक फैले हुए थे। वह पूरी कोशिश करता था कि मेरे राज्य में कोई दु:खी नहीं रहे, अत: समय-समय पर राज्य कर्मचारियों को अपने राज्य का जायजा लेने भेजता रहता और किसी को भी कष्ट हो तो हर सम्भव कोशिश करता कि लोग दु:खी न रहे। कभी-कभी उसे लगता कि मेरे कर्मचारी कामचोर हो रहे हैं या जरूरतमन्द को सहायता नहीं पहुँचा रहे हैं तो खुद कोई न कोई युक्ति भिड़ाकर रास्ता निकाल लेता।

राजा के बेटे राजकुमार का जन्मदिन आया तो उसने पूरे राज्य में ऐलान करवा दिया कि जो भी मेरे बेटे के लिए सबसे सुन्दर उपहार लेकर आएगा उसे दस हजार स्वर्ण मुद्राएँ इनाम में दी जाएँगी।

पूरे राज्य में हलचल मच गई। हर कोई सुन्दर से सुन्दर उपहार खरीदने में लग गया। बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों ने सोने-चाँदी के सुन्दर-सुन्दर खिलौने या अन्य चीजें बनवाईं। बहुत से लोगों ने राजकुमार के लिए नए-नए कपड़े सिलवाए। सभी कोशिश कर रहे थे कि उनका ही उपहार सर्वश्रेष्ठ हो। दीनू जो बहुत गरीब था उसने भी सोचा कि मैं राजकुमार के लिए क्या लेकर जाऊँ? घर में आटे के सिवाय कुछ था ही नहीं, सो उसने पत्नी से कहा—''तुम इस आटे की रोटियाँ बना दो तो मैं राजकुमार के लिए रोटियों का उपहार लेकर जाऊँ।''

पत्नी ने कहा—''क्या पागल हो गए हो? हमारे जैसे गरीब की रोटियाँ तो उनके कुत्ते भी नहीं खाते। लोग सोने-चाँदी और हीरे-मोती से बनी वस्तुएँ ले जा रहे हैं, ऐसे में तुम्हारी इन सूखी रोटियों को कौन पूछेगा?''

दीनू ने कहा—''अरे भाग्यवान्, यह तो मैं भी समझता हूँ लेकिन उपहार के बहाने मैं भी राजा और राजकुमार के दर्शन कर लूँगा। उनका आलीशान महल भी देख लूँगा।''

दीनू की पत्नी ने सारे आटे की रोटियाँ बना दीं। दीनू उन्हें पोटली में बाँधकर उस ओर निकल पड़ा

शिक्षण संकेत

◆ हाव-भाव सहित कहानी का सार बच्चों को सुनाएँ ◆ ''जीवों पर दया ही श्रेष्ठ धर्म है''- इस संबंध में अन्य प्रसंग सुनाकर समझाएँ ◆ कठिन शब्दों के अर्थ वाक्य में प्रयोग कर बताएँ।

जहाँ राजा का भव्य राजमहल था। चलते-चलते रास्ते में उसे एक भिखारी मिला। दीनू ने सोचा बेचारा भूख से कितना कमजोर हो गया है। मेरे पास जो रोटियाँ हैं उनमें से चार इसको दे दूँगा तो क्या फर्क पड़ जाएगा उसने यह सोच कर चार रोटियाँ भिखारी को दे दीं। भिखारी इतनी रोटियाँ देखकर खुश हो गया और दीनू पर आशीर्वादों की झड़ी लगा दी।

दीनू कुछ दूर आगे बढ़ा कि उसने देखा दो कुत्ते कचरे के ढेर से ढूँढ़कर कुछ खा रहे थे। भूख से उनके पेट चिपके हुए थे। दीनू ने दो-दो रोटियाँ दोनों कुत्तों के आगे डाल दीं।

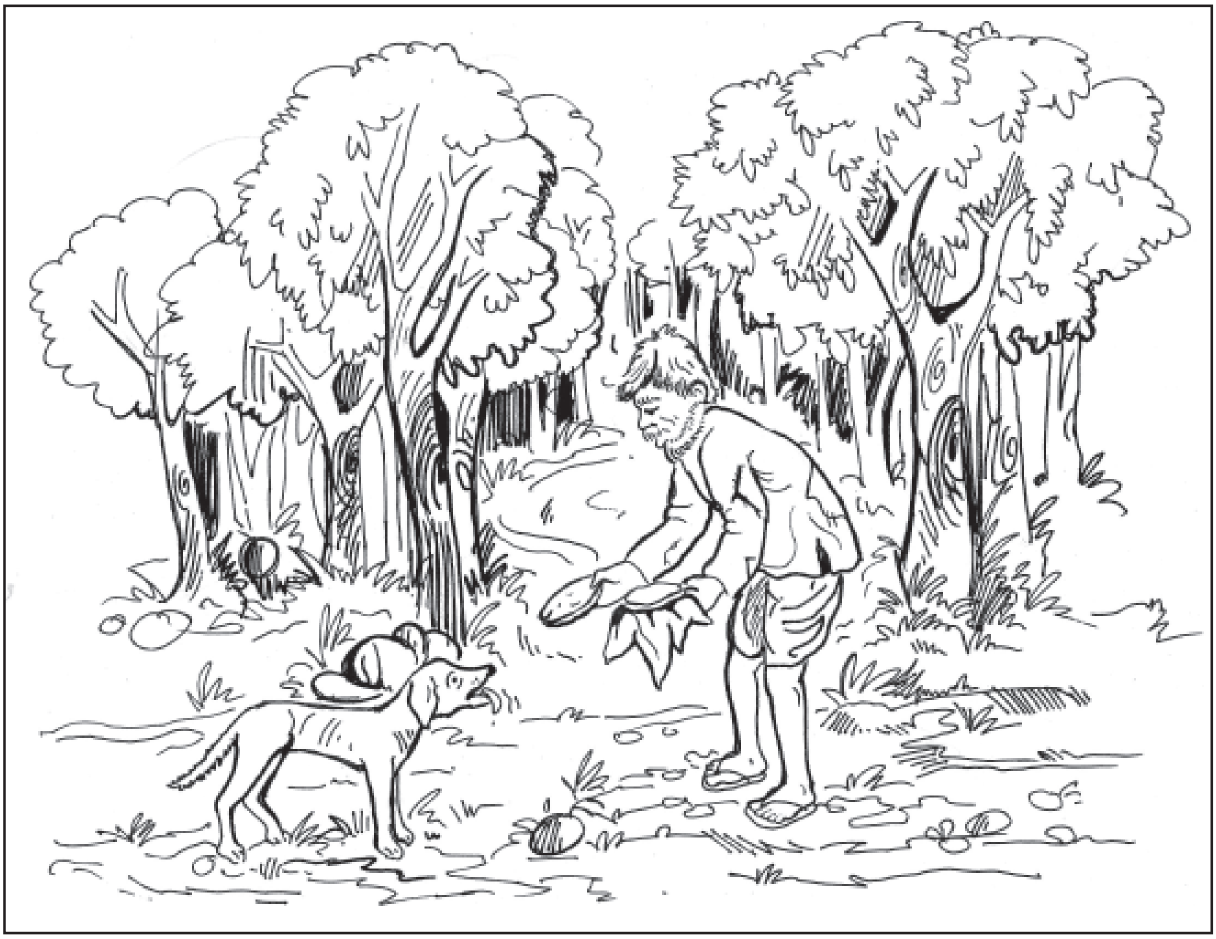

अब उसके झोले में तीन रोटियाँ ही बची थीं। कुछ दूर चलने पर उसे एक गाय मिली और एक बछड़ा भी साथ था जो लगातार माँ के थन खींच रहा था, लेकिन उनमें दूध नहीं था। दीनू गाय को हमेशा ही श्रद्धा से गो-माता के रूप में देखता था सो उसने गो-माता को नमस्कार किया और एक रोटी उसे खिला दी। एक रोटी बछड़े को भी दे दी। सोचा एक रोटी है मेरे पास। कौन ये मेरी रोटी खा ही लेंगे! अतः उपहार के लिए एक रोटी ही काफी है।

राज दरबार में पहुँचकर वह हक्का-बक्का रह गया। वहाँ की भव्यता देखकर उसे अपने कपड़ों और अपनी रोटी पर शर्म आने लगी। बड़े-बड़े लोग सुन्दर से सुन्दर उपहार लाए थे। राज दरबार में जगमग करते

उपहारों का ढेर लग गया। दीनू ने अपना झोला कस कर पकड़ लिया और एक कोने में खड़ा हो गया। अचानक राजा की नजर उस पर पड़ गई। राजा ने कहा—''भाई आगे आओ, तुम क्या उपहार लाए हो मेरे बेटे के लिए? और तुम्हारा नाम क्या है ?''

दीनू सकुचाता हुआ आगे बढ़ा। नर्म सुन्दर कॉलीन पर अपने मैले पाँव रखने में भी उसे संकोच हो रहा था।

राजा ने कहा—''आगे आ जाओ, डरने की कोई बात नहीं है।''

दीनू ने आगे बढ़कर राजा को प्रणाम किया और बोला—''हुजूर मेरा नाम दीनू है। यहाँ से चार कोस की दूरी पर मैं रहता हूँ।''

राजा ने कहा—''लाओ क्या उपहार लाए हो? निकालो झोले से।''

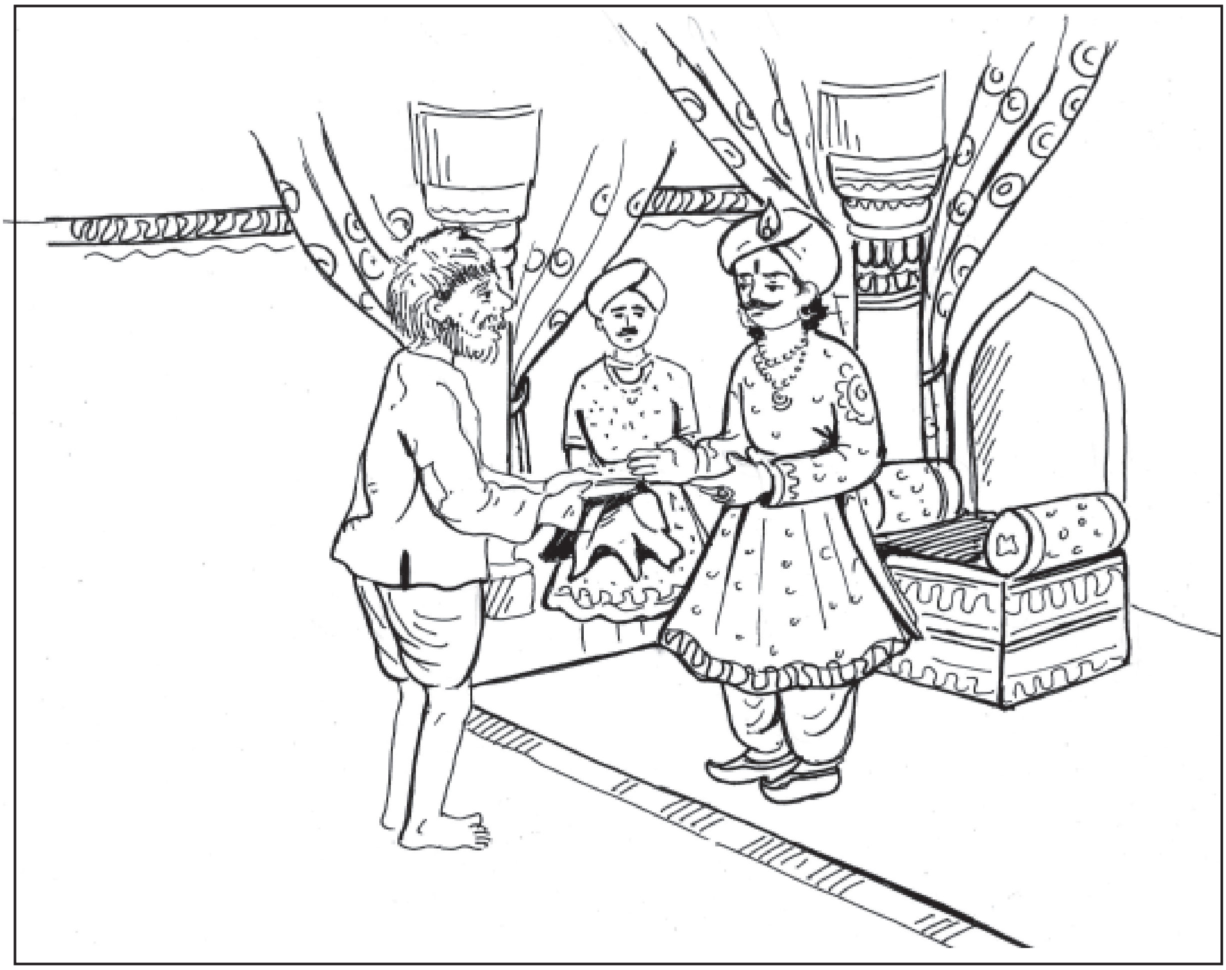

दीनू ने सकुचाते हुए झोले से रोटी निकाली और राजा के सामने रख दी। दरबार में उपस्थित सभी लोग खिलखिला कर हँस पड़े।

राजा ने कहा—''सब खामोश रहें।'' फिर दीनू की तरफ हाथ बढ़ा कर रोटी ले ली और पूछा—

''भाई दीनू एक ही रोटी? एक रोटी से मेरा और राजकुमार का क्या होगा?''

उसने रास्ते का सारा वृतान्त कह सुनाया और बोला—''हुजूर मुझमें आपके लिए उपहार लाने की हैसियत कहाँ है। यह तो जो कुछ मेरे पास था वही लेकर आ गया हूँ ताकि आपके दर्शन कर सकूँ। रास्ते में जरूरतमन्दों को मैंने रोटियाँ बाँट दीं। एक रोटी इसलिए बचाई थी कि इसी बहाने मैं आपके दर्शन कर पाऊँगा।''

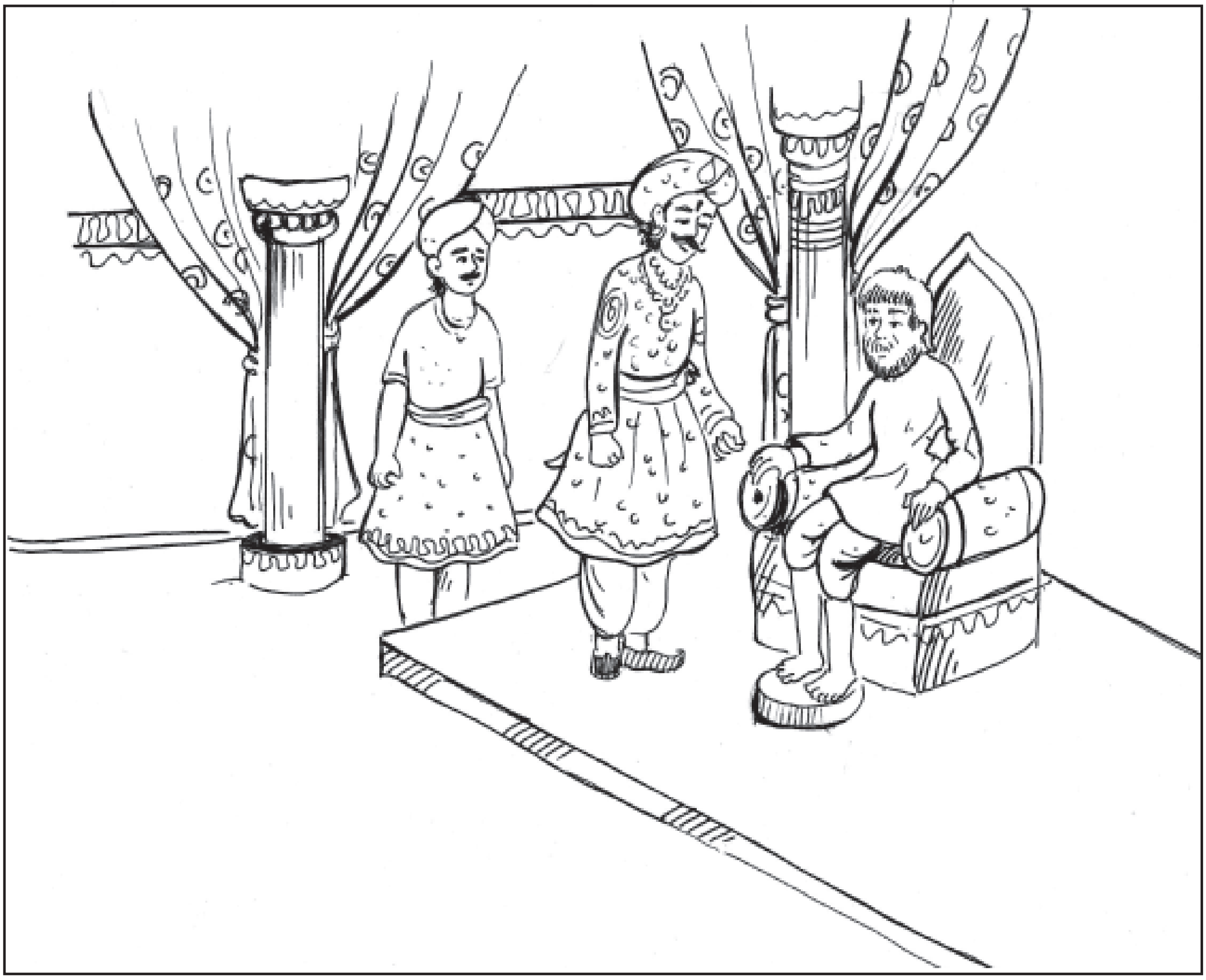

राजा ने उसे कुर्सी पर बैठाया और सभी जनों के बीच ऐलान किया कि आज सबसे अच्छा उपहार दीनू लाया है। सोने-चाँदी की हमारे खजाने में भी कमी नहीं है। दीनू जो उपहार घर से लेकर चला था। उसमें से रास्ते में जिन-जिन भूखों की भूख इसने बुझाई है, उनकी दुआएँ भी वह राजकुमार के लिए लाया है, अत: दस हजार स्वर्ण मुद्राएँ दीनू को दी जाती हैं, साथ ही जीवन भर के लिए इसका और इसके परिवार का भरण-पोषण भी राजकोष से होगा। इसे राजाज्ञा समझा जाए। इसे दस एकड़ जमीन भी दी जाती है, जिस पर वह खेती करे और जरूरतमन्द लोगों को रोटी दे। राजा के इस निर्णय से सभा में उपस्थित सभी हतप्रभ और आश्चर्य चकित थे।

शब्दार्थ

जायजा=जाँच-पड़ताल। **फर्क़**=अंतर। **युक्ति**=उपाय। **ऐलान**=घोषणा। **सर्वश्रेष्ठ**=सबसे अच्छा। **आलीशान**=भव्य, शानदार। **सकुचाना**=संकोच करना। **वृत्तान्त**=समाचार, हाल। **हैसियत**=सामर्थ्य, शक्ति। **हतप्रभ**=चेतना नष्ट हो जाना, भौंचक्का। **उपहार**=भेंट।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- राजा – साहूकार
- जन्मदिन – न्यायप्रिय
- भव्य – उपहार
- सेठ – राजमहल

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- दीनू राजकुमार को उपहार देने हेतु .... लेकर गया। (रोटी/खिलौने)
- दरबार में उपस्थित सभी लोग............ कर हँस पड़े। (खिलखिला/ठिलठिला)
- उपहार के लिए एक रोटी ही ....है। (कम/काफी)
- दीनू घर से .... लेकर चला। (उपहार/हार)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए—

(क) राजा का स्वभाव कैसा था?

(ख) सेठ साहूकारों ने राजा के बेटे को उपहार देने हेतु सुंदर खिलौने किन-किन धातुओं से बनवाए थे?

(ग) उपहार के बहाने दीनू किनको देखना चाहता था?

(घ) दीनू को राजा ने कितनी ज़मीन दी?

(ङ) राज दरबार जाते समय दीनू ने रास्ते में किन-किन लोगों की सहायता की?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए—**
   (क) जरूरतमंदों को सहायता न मिलने पर राजा क्या करता था?
   (ख) दीनू राज दरबार में जाकर आश्चर्यचकित क्यों हो गया?
   (ग) राजाज्ञा क्या थी?
   (घ) दीनू का उपहार सबसे अच्छा क्यों घोषित किया गया?

भाषा की बात

4. **निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए।**
   जरूरतमंद, सर्वश्रेष्ठ, आशीर्वादों, वृत्तान्त, स्वर्ण-मुद्राएँ।
5. **निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए।**
   नमसकार, आर्शीवाद, आश्चर्य, हतपिरभ, उपसथित, राजकोश।
6. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए—**
   ''थोड़ी देर बाद वर्षा <u>होने लगी</u>। माँ ने प्रगति से कहा-शोरगुल मत करो, भाई को <u>पढ़ने</u> दो। मैं तुम्हें खाने को अभी फल <u>ला देती</u> हूँ। फल खाकर उसने पानी पी लिया और माँ से बोली-मैं बाहर <u>जाना चाहती</u> हूँ।''

ऊपर रेखांकित शब्द क्रिया को प्रकट कर रहे हैं। एक वाक्य में दो क्रियाएँ आई हैं। बाद वाली क्रिया पूर्व क्रिया की सहायता कर रही है। 'होना' क्रिया वाक्य में 'होने' तथा 'लगना' क्रिया 'लगी' के रूप में आई है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि—

जहाँ वाक्य में दो क्रियाएँ इस प्रकार आती हैं जिसमें एक मुख्य तथा दूसरी उसकी सहायक होती है वहाँ ये क्रियाएँ <u>संयुक्त क्रिया</u> कहलाती हैं।

6. (क) निम्नलिखित में से संयुक्त क्रिया वाले वाक्य छाँट कर लिखिए तथा बताइए कि उनमें कौन-कौन सी संयुक्त क्रियाएँ आई हैं?
   (क) तुम दूरदर्शन देखते होगे।
   (ख) शीला पढ़ती है।
   (ग) उसका नाम प्रदीप है।

(घ) वह दूध पी चुका होगा।

(ङ) अभी हँसने लगेगा।

6. (ख) संयुक्त क्रिया वाले चार वाक्य बनाकर लिखिए—

पढ़िए समझिए और कीजिए

न्याय और दयालुता के चर्चे दूर-दूर तक फैले हुए थे। समय-समय पर राज्य कर्मचारियों को राज्य का जायजा लेने भेजता था।

ऊपर रेखांकित पुनरुक्त शब्दों के बीच योजक(—) चिह्न लगा है। इनके प्रयोग से वाक्य में कही गई बात में वज़न या प्रभाव बढ़ जाता है।

7. निम्नलिखित योजक चिह्न वाले शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

कभी-कभी, बड़े-बड़े, सुन्दर-सुन्दर, चलते-चलते, दो-दो।

अब करने की बारी

(क) आप अपने मित्रों को कब-कब उपहार देते हैं? ऐसे अवसरों की सूची बनाइए।

(ख) उपहार में कौन-कौन सी जरूरत की चीजें आप भेंट में दे सकते हैं?

(ग) कोई ऐसा प्रसंग लिखिए जिसमें जन्म-दिन की कोई विशेष घटना का उल्लेख हो।

❑❑